बी0एड0 द्वितीय वर्ष

प्रश्नपत्र - पंचम

इकाई- 3

## Sub :- School Culture, Management & Teacher

# विषय :- विद्यालय संस्कृति, प्रबंध एवं शिक्षक

संस्कृति से तात्पर्य किसी समाज का पहनावा विश्वास मान्यताएं जीवन शैली उसी तरह किसी स्कूल की संस्कृति या कल्चर का तात्पर्य उस स्कूल की मान्यताएं विश्वास एवं किए जाने वाले कार्य है। कक्षा शिक्षण का पाठ्यक्रम सभी स्कूलों का एक जैसे ही रहता है। किंतु शिक्षण की व्यवस्था एवं स्कूल का संचालन पूर्णतया अलग रहता है। यह संस्था प्रधान का प्रशासन शिक्षकों की कार्यशैली एवं विद्यार्थियों पर निर्भर करता है। इस दृष्टिकोण से प्रत्येक विद्यालय दूसरे से भिन्न रहता है।

प्रश्न पत्र को पढ़ाए जाने का उद्देश्य B.Ed करने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को संस्कृति को या कहें कार्यपद्धती को जानना समझना आवश्यक है। यह कार्य प्रशिक्षार्थी अपने इंटर्नशिप कार्यक्रम के तहत कर सकते हैं। यही प्रश्न इसको बी0एड0 के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का कारण है। प्रश्न पत्र के उद्देश्य को निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट किया जा सकता है-

- विद्यालय के ऐसा संस्थान है जहां प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित समावेशी शिक्षा प्रदान की जाती है। शिक्षक शिक्षार्थी इस तथ्य से अवगत हो कि विद्यार्थी किस प्रकार विद्यालय में देश के भावी नागरिकों के रुप से तैयार किए जा रहे हैं। विद्यालय की स्थापना संवैधानिक नियमों के तहत की जाती है और विद्यालय कैसे इन नियमों के तहत विभिन्न आवश्यकता, सामाजिक पृष्ठभूमि, क्षमता वाले बच्चों को समानता के साथ शिक्षा देने का कार्य करती है ।
- विद्यालय किस प्रकार अपनी जवाबदेही निभाता हैA सरकारी विद्यालय जवाब देह होता है शासन के प्रति निजी विद्यालय अपने प्रबंधक एवं शासन दोनों के प्रति जवाबदेह होतS हैa । तथा दोनों ही प्रकार के विद्यालय समाज एवं अभिभावकों के प्रति भी जवाबदेह होते हैं । अपनी इस जवाबदेही वे इस प्रकार निभाते हैं एवं किसी प्रकार के प्रश्न उठने पर उसका समाधान कैसे करते हैं इन बातों को भी प्रशिक्षार्थी] जाने यह उद्देश्य है इस प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का ।

- ❖ जब किसी प्रकार का कोई मुद्दा उत्पन्न होता है तो समाधान के लिए विद्यालय का दृष्टिकोण] नेतृत्व] अनुशासन एवं निर्णय में सहभागिता इस प्रकार रहती है इस तथ्य से भी प्रशिक्षार्थी अवगत हो।
- ❖ निजी एवं सरकारी दोनों विद्यालयों में शिक्षकों के काम करने की दशाएं] सुरक्षा] सुविधा स्वयं को क्षमता विकास के अवसर, शिकायत पर शिकायतें दूर करने की कोई प्रक्रिया गत उपक्रम आदि का अध्ययन भी प्रशिक्षर्थियों को करना है एवं तथ्यों से अवगत होना है।
- ❖ प्रबंधकों की शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण उन पर नियंत्रण का भी अध्ययन प्रशिक्षर्थियों को करके अवगत होना है ।

अब हम बात करेंगे कि किसी विद्यालय के विद्यालय संस्कृति की विद्यालय की संस्कृति के विषय में विद्यालय यदि विचार करें तो हमें निम्नलिखित बातों पर भी ध्यान देना होगा।

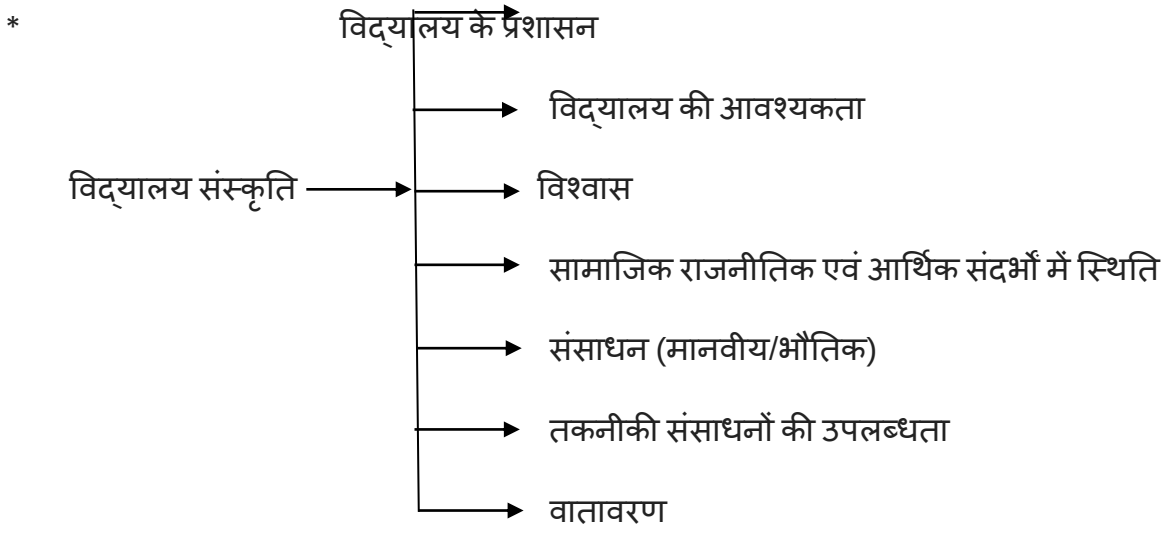


उपरोक्त तथ्य एवं विद्यालय के संचालन को प्रभावित करते हैं यदि प्रशासन मानवीय हुआ तो वातावरण बेहतर होगा तो विश्वास सकारात्मक होगा संसाधन का उपयोग उचित ढंग से होगा एवं आवश्यकताएं पूरी होगी और तकनीकी भी उन्नत होगी। इस तरह विद्यालय संस्कृति समाज के लिए बेहतर नागरिक बनाएंगी। समाज में विद्यालय के लिए बेहतर संदेश होगा राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति को विद्यालय प्रशासन अपने हित में उपयोग कर सकेगा और विद्यालय समाज की सेवा करने में सक्षम हो अपने औचित्य को सिद्ध कर सकेगा।

विद्यालय अपने कुछ मापदंड तय करता है जो उसकी संस्कृति के द्योतक है।

**(Norms of School)**

- ➢ दृष्टिकोण का प्रसार

- मूल्य
- *विश्वास
- *मान्यताएं @अपेक्षाएं
- संबंध (रिश्तों) समाज
- स्कूल की परंपराएं

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर ही विद्यालय का संचालन होता है।

यदि हम विद्यालय के अंदर उसकी गतिविधियों का अवलोकन ध्यान पूर्वक करें तो निम्न अनुसार स्थिति होगी&- एक ऐसा स्कूल

| | | | |
|---|---|---|---|
| **1** | अनुशासन | स्कूल में स्व-अनुशासन विद्यार्थी,शिक्षक, प्राचार्य सभी समयबद्ध आते एवं जाते हैं एवं प्रत्येक कार्य समय के अनुसार | स्कूल में अनुशासन नहीं प्रार्थना के समय प्रायः सब नहीं आते, कक्षाएं नहीं लगती, दूसरी गतिविधियां भी नहीं। |
| **2** | संबंध | शिक्षक विद्यार्थी संबंध, शिक्षक-शिक्षक संबंध प्राचार्य विद्यार्थी शिक्षक समुदाय | सकारात्मक] नकारात्मक या अच्छा नहीं |
| **3** | अवकाश के समय शिक्षकों | की चर्चा विद्यार्थियों की समस्याओं पर समुदाय एवं विद्यालय पर अध्ययन-अध्यापन | नकारात्मक चर्चा विभिन्न समूहों में। |
| **4** | समानता | सभी विद्यार्थियों को समान अवसर | कुछ खास एवं चहेते विद्यार्थियों को ही अवसर |
| **5** | Pedogogy | समय एवं विषय के अनुसार संसाधनों का उपयोग कर] नवाचार का उपयोग cooparative laeaning पर जोर | ढर्रे में अध्यापन |
| **6** | Trust विश्वास | सबका एक दूसरे के साथ सकारात्मक संस्कृति positive culture | किसी का किसी पर नहीं नकारात्मक संस्कृति, Toxic Culture |
| **7** | Interaction | शिक्षक बच्चों के साथ रखते हैं। | बिल्कुल भी नहीं रखते |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | अंतर्संबंध | | |
| **8** | अध्यापन के अलावा शिक्षकों का विद्यार्थियों के साथ बातचीत | सभी विषयों पर संबोधन/ सही समझाइश | कोई बातचीत नहीं |
| **9** | भविष्य की योजना | शिक्षक चर्चा करते हैं | नहीं करते |
| **10** | प्राचार्य एवं विद्यार्थी संबंध | नियमित रहता है | नहीं रहता |

उपरोक्त बिंदुओं पर विचार करने से स्पष्ट है कि कौन से विद्यालय का कल्चर पॉजिटिव है एवं इसका कल्चर Toxic है।

**इस तरह जो विद्यालय निम्न तथ्यों पर ध्यान देंगे वे निरंतर विकास करेंगे।**

- विद्यार्थी के चहुंमुखी विकास ध्यान में रखकर वार्षिक कैलेंडर निर्माण। *
- सिखाने की प्रक्रिया में लचीलापन हो, कोऑपरेटिव लर्निंग, समूह चर्चा, समूह अध्यापन, करने सीखने को महत्व दिया जाए। *
- समुदाय के साथ संबंध अच्छा हो ।
- *शिक्षकों का सम्मान हो प्राचार्य अध्ययन रखे प्राचार्य के सम्मान का शिक्षक ख्याल रखें ।
- *एक अच्छा विश्वास हो विद्यार्थी, शिक्षक और प्राचार्य के बीच।

इस तरह विद्यालय का अच्छा वातावरण विद्यार्थियों के समाज के प्रति विश्वास दिलाता है और वह समाज के प्रति कुछ करने को उद्यत होते हैं वह एक विश्वास के साथ बड़े होते हैं इसके विपरीत विद्यार्थियों को पढ़ने-पढ़ाने में मजा नहीं आता और वे एक अच्छे नागरिक के रूप में बड़े नहीं हो पाते और देश समाज के लिए लाभप्रद नहीं रहते इसलिए स्कूल की कार्यप्रणाली अच्छी होनी चाहिए।

## Unit -3

## Role of Parents Community, Promoters in School Management, Role of Children in School Management

स्कूल के प्रबंधन में अभिभावक समुदाय का प्रमोशन एवं बच्चों की भूमिका के विषय में चर्चा हम बिंदुवार करेंगे-

**<u>अभिभावकों की भूमिका &</u>**

स्कूल को सुचारू रूप से संचालित करने मे अभिभावक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | अभिभावक अपने बच्चों कS माध्यम से स्कूल से पूर्णतया जुड़े रहते हैं। यदि वे ऐसा नहीं कर रहे हो तो यह उनकी कमजोरी है। प्राय: हम दो प्रकार के अभिभावक देखते हैं जो स्कूल की प्रत्येक गतिविधियों की जानकारी रखते हैं वे सजग होते हैं। ऐसे माता पिता अपने कथन एवं कार्य से बच्चों के मन में स्कूल के प्रति आस्था या अनास्था उत्पन्न कर सकते हैं। स्कूल के होमवर्क के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण शिक्षकों के प्रति प्रतिकूल टिप्पणी शुल्क अदायगी आदि में कोताही समय का ध्यान ना रखना] बच्चों को हिंसक एवं समाज के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण वाले नागरिक के रूप में विकसित करता हैA जबकि शिक्षकों के प्रति आस्था उत्पन्न करना गृहकार्य करने में सहयोग करना] समयबद्ध तरीके से स्कूल को सहयोग करना एक अच्छे बच्चे बनने में बच्चों को सहायक होती है।

दूसरा प्रकार उदासीन माता&पिता हैं जिनके बच्चे की पढ़ाई से कोई विशेष मतलब नहीं रहता उन बच्चों पर वातावरण अपना प्रभाव डालती है और बच्चा असुरक्षा में जीने लगता है।

अतः माता-पिता सजग और सकारात्मक होकर विद्यालय में सहयोग करेंगे तो उनके बच्चों का विकास अच्छे से होगा।

**समुदाय की भूमिका-**

बिना समुदाय के सहयोग से कोई भी विद्यालय उचित ढंग से संचालित नहीं हो सकता। स्कूल के मानवीय संसाधनों में यह योग्यता होनी चाहिए कि वे समुदाय से भौतिक संसाधनों का सहयोग तो प्राप्त करे ही साथ-ही-साथ गुणात्मक विकास के लिए भी समुदाय मेघा का प्रयोग करें। यह तभी संभव है जब स्कूल अपना कार्य व्यवस्थित करें ताकि समुदाय में विद्यालय की छवि अच्छी हो और समुदाय विद्यालय को वांछित सहयोग करें। समुदाय में भी या भावना होनी चाहिए कि विद्यालय समाज के लिए कार्य करता है।

**प्रोमोटर्स की भूमिका-**

विद्यालय की स्थापना करने वाले प्रमोटर की यह सोच होनी चाहिए कि विद्यालय समाज के लिए आवश्यक है। विद्यालय के बिना समाज की उन्नति संभव नहीं है। विद्यालय ही समाज की आवश्यकतानुसार नागरिक तैयार कर समाज को सौपता है। इसलिए विद्या का मंदिर विद्यालय की स्थापना लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से नहीं अपितु कल्याण की भावना से करना चाहिए।

विद्यालय में न्यूनतम भौतिक संसाधन होने ही चाहिए। योग्य मानवीय संसाधनों को शिक्षक, **प्राचार्य** एवं कार्यालय में नियुक्ति देनी चाहिए। उन्हें उचित आर्थिक लब्धि प्रदान किया जाना चाहिए। शिक्षकों को अध्ययन-अध्यापन हेतु उचित माहौल दिया जाना जरूरी है। शिक्षकों को समुचित आदर दिया जाना चाहिए।

इस तरह के एक अच्छे कार्य के रूप में प्रोमोटर्स को अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

**बच्चों की भूमिका-** स्कूल सभी अच्छे से संचालित हो पाएगा जब उस विद्यालय के बच्चे अपने स्कूल को प्यार करेंगे एवं उसके प्रति अपने कर्तव्यों को समझ पाएंगे।

- जब बच्चे इतनी स्कूल में प्रवेश लेते हैं तभी से उनको स्कूल के नियमों की जानकारी बहुत अच्छे ढंग से समझाया जाना चाहिए।
- यदि बच्चा नियमों का पालन नहीं कर पा रहा है तोs इसकी जानकारी शिक्षक के द्वारा उस बच्चे से व्यक्तिगत लेनी चाहिए साथ ही उसकी समस्या चाहे किसी भी स्तर की हो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए।
- प्रत्येक बच्चे के मन में यg विश्वास जगाया जाना चाहिए कि वह अपनी कक्षा, विद्यालय, समाज, राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण है।

कुछ इन्हीं भावनाओं के साथ बच्चों को विद्यालय के प्रत्येक कार्य में संलग्न करते हुए उनकी भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए।

- बच्चों को सफाई में संलग्न करना, शिक्षक उनके साथ रहे तो बच्चे स्कूल की सफाई के प्रति जिम्मेदार रहेंगे एवं उन्हें साफ रहने की आदत विकसित होगी।
- विद्यालय में अध्यापन में बच्चों को सक्रिय रखा जाए।
- नियम के पालन में छात्रों का सहयोग लिया जाए।
- समुदाय में जाकर कार्य करेंगे की इच्छा हो वह अपने विद्यालय के संबंध में समुदाय की जानकारी दें।
- दिवसों के आयोजन में छात्रों के विचार के लिए जाएं एवं छात्र सक्रिय रुप से सहयोग करें।
- छात्र रेडक्रॉस] स्काउट गाइड की गतिविधियों के माध्यम से स्वयं के व्यक्तित्व का विकास करें एवं विद्यालय में सकारात्मक भूमिका निभाएंA
- विद्यालय में अनुशासन स्थापित करने में सक्रिय हो।

**इस तरह अभिभावक, समुदाय, प्रमोटर्स एवं बच्चे मिलकर ही** स्कूल को समुचित सहयोग कर उचित संचालन कर सकते हैं।